

---

# Shri Gayatri Ashtakam 3

श्रीगायत्रष्टकम् ३

## Document Information

---

Text title : gAyatryaShTakam 3  
File name : gAyatryaShTakam.itx  
Category : devii, aShTaka, gAyatrI, devI  
Location : doc\_devii  
Proofread by : PSA Easwaran  
Latest update : January 5, 2020  
Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Gayatri Ashtakam 3

---

### श्रीगायत्र्यष्टकम् ३

---



उषःकालगम्यामुदात्त स्वरुपां  
अकार प्रविष्टामुदाराङ्गभूषाम् ।  
अजेशादिवन्धामज्ज्याङ्गभाजा-  
मनौपम्यरुपां भजाम्यादि सन्ध्याम् ॥ १ ॥

सदासंस्थानां स्युरद्रत्नवस्त्रां  
वराभीतिहस्तां भगाम्नायरुपाम् ।  
स्फुरत्साधिकामक्षमालां य कुम्भं  
ध्यानमर्द्धं भावये पूर्वसन्ध्याम् ॥ २ ॥

स्फुरययन्द्रकान्तां शरय्यन्द्रवक्त्रां  
महायन्द्रकान्ताद्रिपीनस्तनाढ्याम् ।  
त्रिशूलाक्षहस्तां त्रिनेत्रस्यपत्नीं  
वृषारुढपादां भजे मध्यसन्ध्याम् ॥ ३ ॥

सदासामगानप्रियां श्यामलाङ्गीं  
अकारान्तरस्थां करोल्लासि यकाम् ।  
गाण्णापन्नहस्तां स्वनत्पाञ्चजन्त्यां  
भगेशोपविष्टां भजेमास्तसन्ध्याम् ॥ ४ ॥

प्रगल्भस्वरुपां स्फुरत्कुण्डलाढ्यां  
सदालम्बमानस्तनप्रान्तलाराम् ।  
महानीलरत्नप्रभाकुण्डलाढ्यां  
स्फुरत्स्मेरवक्त्रां भजे तुर्यसन्ध्याम् ॥ ५ ॥

वृद्धम्भोजमध्ये पराम्नायनीडे  
सुभासीनसद्राजडंसां मनोज्ञाम् ।  
सदाडेमभासां त्रयीविद्यमध्यां  
भजामस्तुवामो वदामः स्मरामः ॥ ६ ॥

सदातत्पदैः स्तूयमानां सवित्रीं  
वरेण्यां मडाभर्गुरुपां त्रिनेत्राम् ।  
सदा देवदेवादि देवस्थपत्नी-  
मडन्धीमडीत्यादि पादैकजुष्टाम् ॥ ७ ॥

अनाथं दरिद्रं दुराचारयुक्तं  
शतं स्थूलबुद्धिं परं धर्महीनम् ।  
त्रिसन्ध्यं जपध्यानहीनं मडेशि  
प्रपन्नं य मां पालय त्वं कृपालो ॥ ८ ॥

छतीहं ढुजङ्गं पडेधस्तु ढकृत्या  
समादाय चित्ते सदा तां परां य ।  
त्रिसन्ध्यास्वरुपां त्रिलोकैकवन्धां  
स मुक्तो ढवेत्सर्वपापैरजस्रम् ॥ ९ ॥

छति श्रीगायत्र्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

---

—  
*Shri Gayatri Ashtakam 3*

pdf was typeset on November 22, 2022

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

